शुल्क १५ वर्ष
३१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति १०/- रुपये
वार्षिक ३००/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष २३ : अंक १० : नई दिल्ली : २-८ जून २०१७

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण और महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी आदि श्रमणियां कोलकाता महानगर की सीमा में पधार गए हैं। पूज्यप्रवर जून में कोलकाता महानगर के विभिन्न उपनगरों में यात्रा-प्रवास कर दो जुलाई को नवनिर्मित 'महाश्रमण विहार' में भव्य चातुर्मासिक प्रवेश करेंगे। कोलकातावासियों में अपने आराध्य के आगमन से उल्लास, उत्साह और उमंग का माहौल है। यों तो गर्मी का मौसम प्रखरता धारण किए हुए है, फिर भी एक दिन में मौसम के विभिन्न रूप दिखाई दे जाते हैं।

परम पूज्य आचार्यप्रवर कोलकाता की ओर

शांतिनिकेतन में शांतिदूत ने दिया विश्वशांति का संदेश

२१ मई। परम पावन आचार्यप्रवर आज प्रातः 'प्रान्तिक' गांव से शांतिनिकेतन की ओर प्रस्थित हुए। आज रविवार होने के कारण कोलकाता के श्रद्धालु बड़ी तादाद में उपस्थित थे। विहार के दौरान 'प्रान्तिक' गांव में रहने वाले एक माहेश्वरी परिवार ने अपने घर के समीप पूज्यप्रवर से मंगलपाठ का श्रवण किया। शांतिनिकेतन स्थित निर्धारित प्रवास स्थल में आचार्यप्रवर के प्रवेश का समय करीब सात बजे निर्धारित किया हुआ था। विहार छोटा होने के कारण जल्दी ही उसके सन्निकट पधार गए। आचार्यप्रवर ने मार्ग में कुछ क्षण विराजमान होकर प्रतीक्षा की। इस दौरान पूज्यप्रवर ने 'शांतसुधारस' का आंशिक स्वाध्याय किया। निर्धारित समय पर आचार्यप्रवर ने शांतिनिकेतन स्थित विश्वभारती विश्वविद्यालय के रतनकुटी में प्रवेश किया। इससे पूर्व 'रतनकुटी' के मुख्य द्वार पर विश्वभारती विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर श्री स्वपन कुमार दत्त आदि ने जैनविश्वभारती संस्थान मान्य विश्वविद्यालय के अनुशास्ता का भावभीना स्वागत किया। आज का विहार करीब ३.० किमी का रहा।

विश्वभारती विश्वविद्यालय भारत के केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में एक है। अनेक स्नातक और परास्नातक संस्थान इससे संबद्ध हैं। श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर (ठाकुर) के पिता महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर ने सन् १८६१ में अपनी साधना हेतु बोलपुर नामक ग्राम में सात एकड़ जमीन पर 'ब्रह्मचर्य' नामक आश्रम की स्थापना की, जिसका नाम कालांतर में 'शांतिनिकेतन' रखा गया। सन् १९०१ में रवीन्द्रनाथ टैगोर ने इसी स्थान पर बालकों की शिक्षा हेतु एक प्रयोगात्मक विद्यालय स्थापित किया, जो प्रारम्भ में 'ब्रह्म विद्यालय' तथा सन् १९२१ में 'विश्वभारती विश्वविद्यालय' के नाम से प्रख्यात हुआ। मात्र पांच विद्यार्थियों से प्रारम्भ हुए इस शिक्षण संस्थान में वर्तमान में करीब आठ हजार से अधिक विद्यार्थी पढ़ते हैं। भारत सरकार द्वारा संचालित इस विश्वविद्यालय के चांसलर भारत के प्रधानमंत्री पदेन रूप में होते हैं। बताया गया कि इस विश्वविद्यालय में ४७ विभाग कार्यरत हैं।

प्रातराश के उपरान्त विश्वभारती विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर श्री स्वपन कुमार दत्त आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में उपस्थित हुए। पूज्यप्रवर का उनसे विभिन्न विषयों पर वार्तालाप हुआ। श्री दत्त ने पूज्यप्रवर के समक्ष विश्वभारती विश्वविद्यालय के संदर्भ में अवगति प्रस्तुत की। आज का मुख्य प्रवचन कार्यक्रम प्रवास स्थल से करीब आधा किमी दूर स्थित नाट्यघर में समायोजित हुआ। आचार्यप्रवर जब प्रवास स्थल से प्रवचन स्थल में पधारे, श्री दत्त भी पूज्यप्रवर के साथ पैदल चले।

प्रवचन स्थल में पधारते ही विश्वविद्यालय के सांस्कृतिक विभाग के विद्यार्थियों ने मंगलध्वनि से आचार्यप्रवर का अभिनन्दन किया। कार्यक्रम का प्रारम्भ आचार्यप्रवर के मंगल महामंत्रोच्चार से हुआ। जैन विश्वभारती संस्थान

मान्य विश्वविद्यालय के पूर्व रजिस्ट्रार व शांतिनिकेतन स्थित विश्वभारती विश्वविद्यालय के संस्कृत, प्राकृत एवं पाली विभाग के प्रोफेसर श्री जगतराम भट्टाचार्य ने आचार्यप्रवर के स्वागत में अपनी श्रद्धासिक्त भावाभिव्यक्ति दी। अहिंसा यात्रा के प्रवक्ता मुनि कुमारश्रमणजी ने आचार्यप्रवर और अहिंसा यात्रा के विषय में अपने विचार व्यक्त किए।

मुख्यनियोजिकाजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'आज रवीन्द्रनाथ टैगोर से जुड़े इस पवित्र प्रांगण शान्तिनिकेतन में विश्वशांति की चर्चा हो रही है। यदि व्यक्ति परिवार और समाज शांत हो तो विश्वशांति का सपना साकार हो सकता है। इसके लिए जनता को अहिंसा प्रशिक्षण मिले, यह अपेक्षित है। परम पूज्य आचार्यप्रवर अहिंसा यात्रा के द्वारा जन-जन को जागृत कर विश्वशांति की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं।'

विश्वभारती विश्वविद्यालय के कुलपति श्री स्वपन कुमार दत्त ने कहा--'परम श्रद्धेय अहिंसा यात्रा प्रणेता अध्यात्म, दर्शन, संस्कृति और मानवीय चरित्र के उत्थान के लिए समर्पित भगवान महावीर की परंपरा में जैन श्वेताम्बर तेरापंथ के ग्यारहवें आचार्यश्री महाश्रमणजी का गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर की भूमि में हार्दिक अभिनन्दन करता हूं। आचार्यश्री! आपके कार्यों में करुणा, परोपकारिता एवं मानवता के दर्शन होते हैं। आपकी विनम्रता, सरलता, साधना एवं ज्ञान की प्रौढ़ता भारतीय ऋषि परंपरा की संवाहक दृष्टिगोचर होती है। आपने लाखों श्रद्धालुओं को नैतिक मूल्यों के विकास, सांप्रदायिक सौहार्द, मानवीय एकता एवं अहिंसक चेतना के जागरण के लिए अभिप्रेरित किया है। आप लाखों लोगों को नैतिक एवं अहिंसात्मक जीवनशैली प्रेरणा देने के लिए पदयात्राएं कर रहे हैं। आपके सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के संदेश को असंख्य लोग सहर्ष स्वीकार कर रहे हैं। जाति-पांती से दूर आपकी अहिंसा यात्रा के दौरान हर जाति, वर्ग, क्षेत्र और संप्रदाय का व्यक्ति आपके प्रवचन से लाभान्वित हो रहा है। मुझे इस यात्रा में संभागी होने का सौभाग्य मिला, यह निश्चय ही परमेश्वर की बड़ी अनुकंपा है। हिंसा और अनैतिकता के अंधकार के बीच अहिंसा, नैतिकता और ज्ञान का दीपक जलाने के लिए आप एक महापुरुष की भांति हमारे बीच पधारे हैं। अध्यात्म एवं नैतिकता, अनुकंपा एवं परोपकार, शांति एवं सौहार्द जैसे मानवीय मूल्यों के प्रखर वक्ता आचार्यश्री की अमृतवाणी से हम सभी लाभान्वित होंगे, यह मेरा विश्वास है।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आज का विषय रखा गया है विश्वशांति के सूत्र। मैं थोड़ी शब्द मीमांसा करना चाहूंगा। शांति शब्द से हम परिचित हैं ही कि समाधि रहे, दुःख न रहे, प्रसन्नता रहे। शांति के साथ 'विश्व' शब्द और जुड़ा हुआ है। विश्व के दो अर्थ होते हैं। उसका प्रसिद्ध अर्थ है संसार। विश्व शब्द का कुछ अप्रसिद्ध अर्थ है संपूर्ण। इस प्रकार विश्वशांति के दो अर्थ हो गए-संसार की शांति और संपूर्ण शांति। संसार में भी शांति बहुत जरूरी है। एक देश के साथ दूसरे देश का शांतिपूर्ण व्यवहार हो, आपसी संबंध मैत्रीपूर्ण हो। देश की सीमा पर सुरक्षा व्यवस्था के लिए सैनिकों की तैनाती की जाती है। यह मात्र उपचार रह जाए। सैनिकों की तैनाती आवश्यक ही न रहे अर्थात् एक देश को दूसरे देश से खतरा न रहे। यह स्थिति पूरे संसार में बन जाए तो इस संदर्भ में विश्वशांति की बात बन जाती है। पड़ोसी देशों में परस्पर तनावपूर्ण स्थितियां क्यों रहें? छुटफुट हिंसा का दौर न हो, तनाव न हो, जवाबी कार्यवाही की अपेक्षा ही न रहे, परस्पर मैत्रीपूर्ण भाव रहे। इस प्रकार विश्व के हर देश में अन्य देशों के प्रति मैत्रीभाव रहे। विध्वंसक शक्तियों का उपयोग करने की अपेक्षा न रहे। शक्ति संपन्न बनना एक बात है तथा शक्ति का उपयोग करना दूसरी बात है। शक्ति का उपयोग दूसरों को दुःख देने में नहीं, दूसरों की पवित्र निरवद्य सेवा करने में हो तो कितनी शांति रह सकती है। 'विश्वैकनीडम्'--विश्व अपने आप में एक परिवार है। संस्कृत में कहा गया--

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।

यह मेरा, यह पराया--यह छोटे चित्तवाले लोगों का चिंतन होता है। उदार चरित्र वाले लोग तो पूरी पृथ्वी को अपना परिवार मानते हैं। हालांकि यह भी सापेक्ष बात है। इस बात का इतना सारांश निकाला जा सकता है कि पूरे विश्व के प्रति मैत्री भावना रहे।

जैन वाङ्मय में कहा गया--मेत्ती मे सव्वभुएसु, वेरं मज्झ ण केणई--सभी प्राणियों के प्रति मेरा मैत्री भाव है। किसी के साथ वैर नहीं है। विश्वशांति के संदर्भ में अनेक बातें हो सकती हैं, किन्तु जैन वाङ्मय के इस सूत्र को विश्वशांति का एक आधारभूत सूत्र माना जा सकता है।

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभागभवेत्।।

यह भी विश्वशांति का आधारभूत श्लोक है कि दुनिया में सब सुखी रहें और सब कल्याण की ओर देखें।

'विश्व' शब्द का दूसरा अर्थ है-संपूर्ण। विश्वशांति अर्थात् संपूर्ण शांति रहे। एक-एक आदमी में संपूर्ण शांति रहे। हम शांतिनिकेतन विश्वभारती विश्वविद्यालय में अवस्थित हैं। एक छोटा-सा क्षेत्र ही शांतिनिकेतन न रहे, हर घर, हर देश शांतिनिकेतन बन जाए तो संसार भर की शांति और संपूर्ण शांति भी हो सकेगी। व्यक्तिगत व पारिवारिक जीवन में भी शांति रहे।

दुनिया में अनेक महापुरुष हुए हैं। चिंतनशील मनीषी भी हुए हैं। आत्मा का साक्षात्कार वाले लोग हुए हैं। उनमें से कुछ ने मार्गदर्शन भी दिया है। प्राचीनकाल में भगवान महावीर, महात्मा बुद्ध, भगवान राम आदि तथा अर्वाचीन काल में महात्मा गांधी, आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ, रवीन्द्रनाथ टैगोर आदि कितने व्यक्तित्व हुए हैं, जिन्होंने मानों कुछ प्राप्त किया और अपने साहित्य, प्रवचन और वाणी के माध्यम से जनता को मार्गदर्शन दिया।

शांति का पहला सूत्र है-उपशम। विश्वशांति के संदर्भ में आवेश पर नियंत्रण रखना आवश्यक है। गुस्सा अशांति का कारण बन जाता है। गुस्सा करने वाला स्वयं अशांत बन सकता है और दूसरों के लिए भी अशांति का कारण बन सकता है। इसलिए आदमी को गुस्से पर नियंत्रण रखना चाहिए। शांति से बात करने की शैली को अपनाना चाहिए। मेरा सोचना है कि आध्यात्मिक दृष्टि से गुस्सा तो किसी भी स्थिति में काम का नहीं है। वह तो सर्वत्र हेय है। वह शांति का एक शत्रु है। वह नियंत्रित रहे तो विश्वशांति की दिशा में आगे बढ़ा जा सकता है। ध्यान, साधना, अनुप्रेक्षा संकल्प के द्वारा गुस्से पर नियंत्रण का प्रयास किया जा सकता है।

एक व्यक्ति एक संत के पास गया और बोला--'संतप्रवर! मुझे गुस्सा बहुत आता है। फिर कलह की स्थिति बन जाती है। परिवार में अशांति हो जाती है।' संत ने कहा--'तुम एक छोटा-सा उपाय कर लो कि तुम्हें जब कभी गुस्सा आने लगे तो एक मिश्री का बड़ा टुकड़ा मुंह में रख लिया करो और पन्द्रह-बीस मिनिट तक उसे चूसते रहा करो। युवक ने वह प्रयोग किया तो उसे लगा कि गुस्से पर काफी नियंत्रण हो गया है। प्रेक्षाध्यान में दीर्घश्वास आदि साधना के अनेक प्रयोग हैं। आदमी किसी पवित्र तरीके से गुस्से को नियंत्रित रखने का प्रयास करे, यह काम्य है।

शांति का दूसरा सूत्र है इच्छा परिमाण--आदमी को लोभ में ज्यादा नहीं जाना चाहिए। इच्छाओं को अति नहीं करना चाहिए। जैन श्रावकाचार में पांचवां व्रत है--इच्छा परिमाण। यह केवल जैन श्रावकों के लिए ही नहीं, सभी गृहस्थों के लिए काम्य है कि भौतिकता के संदर्भ में इच्छाओं का सीमा करें। इच्छापरिमाण होगा तो विश्वशांति की दिशा में गति हो सकेगी।

शांति का तीसरा सूत्र है--अभय। भय शांति का एक बाधक तत्त्व है। आदमी को भय का निवारण कर लेना चाहिए। वह आदमी परम सुखी होता है, जो पूर्णतया अभय बन जाता है। भय का भाव कम हो जाए, अभय का भाव पुष्ट हो जाए तो विश्वशांति की दिशा में आगे बढ़ा जा सकता है।

शांति का चौथा सूत्र है--निश्चिन्तता। आदमी के मन में चिंता रहती है तो शांति में बाधा पैदा हो सकती है। कहा गया--चिंता नहीं, चिंतन करो। दिमाग में बार-बार चिंता का भाव मुखर होता रहे, यह अच्छा नहीं होता। आदमी के सामने बहुत काम हो सकते हैं, वह व्यस्त भी हो सकता है। कार्य में व्यस्त होना एक बात है, पर दिमाग का अस्त-व्यस्त होना अलग बात है। अच्छे कार्यों में व्यस्त भले रहें, दिमाग अस्त-व्यस्त नहीं बनना चाहिए, ज्यादा तनाव नहीं रहना चाहिए, चित्त की प्रसन्नता रहनी चाहिए। बहुत से कार्य सामने आने पर भी प्राथमिकता की सूची के आधार पर समय और कार्य में सामंजस्य बिठा कर कैसे कार्य किया जाए, उसकी विधा आदमी हस्तगत कर ले तो वह व्यस्तता की स्थिति में भी काफी तनावमुक्त रह सकता है।

इस प्रकार गुस्सा, लोभ, भय और चिंता--इन चारों पर हमारा नियंत्रण हो जाए तो हम विश्वशांति को प्राप्त कर सकते हैं, विश्वशांति की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।

हम लोग अहिंसा यात्रा कर रहे हैं। अभी पश्चिम बंगाल में हैं। नेपाल, भूटान भी गए थे। भारत के विभिन्न राज्यों में भी गए तथा आगे और भी कई राज्यों में जाने की संभावना है। आज यहां कवीन्द्र रवीन्द्र से जुड़ी भूमि पर आना हुआ है। कुलपतिजी भी बैठे हैं। विद्या संस्थानों में भूगोल, खगोल आदि विषय पढ़ाए जाते हैं, इनकी उपयोगिता भी है। इनके साथ अहिंसा और शांति की शिक्षा विद्यार्थियों को मिलनी चाहिए। यहां से पढ़कर निकलने वाला विद्यार्थी अपने परिवार को कैसे शांतिनिकेतन बना सके। वह यह कह सके कि मैं शांतिनिकेतन में पढ़ा था, अब शांतिनिकेतन में रह रहा हूं। शांतिनिकेतन से निकले हुए विद्यार्थी का घर भी शांतिनिकेतन बन जाए, बना रहे, ऐसी शिक्षा यहां पढ़ने वाले विद्यार्थियों को मिलती होगी/मिलनी चाहिए।

आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञजी के पास जीवन-विज्ञान की बात चली थी कि विद्यार्थी बौद्धिक ज्ञानात्मक विकास करे, उसके साथ वह भावात्मक विकास भी करे। उसके भावों में पवित्रता रहे। घृणा, ईर्ष्या, गुस्सा आदि भावों पर उसका नियंत्रण हो जाए। जीवन में बुद्धि और भावशुद्धि का योग हो जाए तो शांतिनिकेतन की बात साकार हो सकती है। आदमी का घर ही नहीं, जीवन भी शांतिनिकेतन बन सकता है। आदमी कहीं रहे, शांति में रहे। इस प्रकार अनेक सूत्रों पर ध्यान देकर विश्वशांति की दिशा में आगे बढ़ा जा सकता है।'

पूज्यप्रवर के प्रवचन के उपरान्त जिज्ञासा समाधान का उपक्रम रहा, जिसमें परम पूज्य आचार्यप्रवर ने विश्वभारती विश्वविद्यालय से संबद्ध वरिष्ठ लोगों की जिज्ञसाओं को समाहित किया। आचार्यप्रवर द्वारा प्रदत्त सटीक समाधान उन लोगों की जिज्ञासाओं को समाहित करने के साथ-साथ उपस्थित जनमेदिनी को अभिभूत करने वाले थे। आज रविवार होने के कारण कोलकाता महानगर के हजारों श्रद्धालु आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में उपस्थित थे। लोगों के मुख पर जिज्ञासा-समाधान कार्यक्रम की प्रभावकता दिनभर मुखर होती रही। प्रवचन और जिज्ञासा-समाधान उपक्रम के दौरान पूज्यप्रवर का तन पसीने से तर-बतर बना हुआ था, किन्तु आचार्यप्रवर उसकी परवाह किए बिना अपनी अमृतवाणी से श्रोताओं को लाभान्वित बना रहे थे। कार्यक्रम में कोलकाता प्रवास व्यवस्था समिति की ओर से श्री सुरेन्द्र दुगड़ ने आभार ज्ञापित किया। विश्वभारती विश्वविद्यालय के उपयोगार्थ तेरापंथ का साहित्य भी कुलपति श्री स्वपन कुमार दत्त को भेंट किया गया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया। कोलकाता के हजारों श्रद्धालुओं की उपस्थिति से कार्यक्रम और अधिक भव्य और गरिमापूर्ण बन गया। कुलपति श्री दत्त ने कार्यक्रम के उपरान्त कार्यकर्ताओं से कहा--'इतनी विशाल उपस्थिति में आयोजित होने वाला यह कार्यक्रम विश्वभारती विश्वविद्यालय के विरल कार्यक्रमों में एक है। हजारों लोगों की उपस्थिति के बावजूद कार्यक्रम में शांति की स्थिति यथावत रहना मेरे लिए आश्चर्य का विषय है। मैं और विश्वविद्यालय का प्रांगण आचार्यश्री के पधारने से धन्य हो गया।'

जिज्ञासा-समाधान

विश्वभारती विश्वविद्यालय के फिलोसाफी डिपार्टमेंट की प्रोफेसर सबुज कली सैन--'आचार्यश्री! अभी आपने विश्वशांति के चार बाधक तत्त्व बताए-चिंता, गुस्सा, लोभ और भय। इन सबका मूल कारण है-मैं और मेरा। हम मैं और मेरा से कैसे दूर रहें?

आचार्यप्रवर--''मैं' अहंकार और 'मेरा' ममत्व का प्रतीक माना जा सकता है। मैं आपको भगवद्गीता की बात बताऊं कि अर्जुन ने श्रीकृष्ण से पूछा--

अथ केन प्रयुक्तोऽयं पापं चरति पुरुषः।
अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय! बलादिव नियोजितः।।

हे वार्ष्णेय! (वृष्णि कुलोत्पन्न श्री कृष्ण) यह मनुष्य न चाहते हुए भी किससे प्रेरित होकर पाप का आचरण करता है? मानों वह किसी के द्वारा बलपूर्वक खींचा जा रहा है।

श्रीकृष्ण ने उत्तर में कहा--

काम एष क्रोध एष, रजोगुण समुद्भवः।
महाशनो महापाप्मा, विद्ध्येनमिह वैरिणम्।'

रजोगुण से उत्पन्न हुआ यह काम और यह क्रोध, जो वह बहुत खानेवाला अर्थात् भोगों से कभी न अघाने वाला और महापापी है, संसार में इसे तुम शत्रु जानो।

यहां 'मेरा' को काम और 'मैं' को क्रोध के प्रतीक के रूप में भी देखा जा सकता है। आदमी की काम की वृत्ति संतुलित और गुस्से की वृत्ति शांत रहनी चाहिए। जैन वाङ्मय में 'मैं' (अहं) को कम करने के लिए मृदुता (विनम्रता) का प्रयोग निर्दिष्ट किया गया। 'मेरा' इस भाव को कम करने के लिए आदमी को चिन्तन करना चाहिए कि इस नश्वर संसार में मेरा क्या है? और तो क्या यह शरीर भी मेरा नहीं है, एक दिन छूटने वाला है। परिवार, धन आदि भी एक दिन छूटने वाले हैं। मैं मात्र इनका उपयोग कर रहा हूं, किन्तु ये शाश्वत रूप में मेरे नहीं हैं। इस प्रकार के चिंतन से भी दिशा परिवर्तन हो सकता है। एक भावना होती है--'मेरा सो मेरा, तेरा सो भी मेरा' यह मेरेपन की भावना है। दूसरा चिंतन होता है--'तेरा सो तेरा, मेरा सो भी तेरा' यह मेरेपन को छोड़ने का प्रयास है। अध्यात्म की उच्च भूमिका में यह चिंतन हो सकता है 'ना कुछ तेरा-ना कुछ मेरा, दुनिया रैन-बसेरा।' इस प्रकार के चिंतन से राग-द्वेष युक्त 'तेरा-मेरा' को समाप्त किया जा सकता है।

संस्कृत, प्राकृत व पाली विभाग के प्रोफेसर श्री जगतराम भट्टाचार्य--'कोई व्यक्ति जब कहीं अपना मकान बनवाना चाहता है तो वह यह देखता है कि उसके आसपास का माहौल कैसा है? गुरुदेव तुलसी कहते थे--'सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से, राष्ट्र स्वयं सुधरेगा' एक ओर व्यक्ति सुधरा हुआ समाज और परिवेश खोजता है और दूसरी ओर व्यक्ति के सुधार से समाज सुधार की बात की जाती है, इन दोनों बातों में सामंजस्य कैसे हो?'

आचार्यप्रवर--'व्यक्ति-व्यक्ति के सुधार से समाज सुधर जाएगा, यह तो सामान्य बात है। एक समाज में यदि व्यक्ति-व्यक्ति सुधर जाएगा तो समाज स्वतः सुधर जाएगा। व्यक्ति यह सोचता है कि मेरे आसपास के बाहरी निमित्त अच्छे रहेंगे तो मेरे अच्छे रहने में सुविधा मिलेगी। इसलिए कहा गया कि सत्संगत करो, अच्छों के बीच रहो। अच्छों के बीच रहोगे तो तुम्हारे में अच्छाइयों का विकास सहजतया हो सकेगा। बाहर के निमित्त भी आदमी को बिगाड़ने वाले हो सकते हैं। आप लाडनूं रहे हैं, वहां ध्यान-साधना का क्रम भी चलता है। बाहर के निमित्त भी अच्छे रहें, वातावरण शांत हो, आसपास प्राकृतिक अनुकूलता हो तो ध्यान-योग की साधना में सुविधा हो सकती है।

दो शब्द आते हैं-उपादन व निमित्त। किसी कार्य के मूल कारण को उपादान और सहायक कारण को निमित्त कहा जाता है। मन की शांति में भीतर का उपशम भाव उपादान के रूप में होता है। यदि बाहरी निमित्त अच्छे न हों अर्थात् आसपास के रहने वाले लोग कलह, निंदा आदि करने वाले हैं तो उनका व्यवहार भी आदमी की शांति में बाधा उत्पन्न कर सकता है। उपादान भी अच्छा रहे और निमित्त भी अच्छे हों तो आदमी शांति में रह सकता है। इसलिए व्यक्ति स्वयं के उपादान पर भी ध्यान दे और बाह्य निमित्त भी अच्छे चुने तो विकास में सुविधा हो सकती है।

सिक्योरिटी ऑफिसर श्री सुदीप्त गोस्वामी--'दुनिया में इतने धर्म-संप्रदाय हैं, हम किसे अपनाएं?'

आचार्यप्रवर--'संप्रदाय एक हो जाएं, इसमें कोई आपत्ति नहीं, किन्तु यह अति मुश्किल कार्य है। कोई कह दे कि पूरे विश्व की एक सरकार हो तो वह कितना मुश्किल कार्य है। कोलकाता पास में है, वहां कितनी दुकाने हैं। यदि कोई कह दे कि सारी दुकानें एक हो जाएं तो वह असंभव-सा कार्य है और उससे कठिनाई भी हो सकती है। खरीददार अपने विवेक से काम लेता है कि किस दुकान से माल खरीदूं। दुनिया में डॉक्टर बहुत हैं, किन्तु किस डॉक्टर से इलाज करवाना, यह आदमी के विवेक की बात है। इसी प्रकार ये संप्रदाय धर्म की दुकानें हैं, आप देख लीजिए किस दुकान का माल अच्छा है? जहां से अच्छा माल मिले, वहां से वह ले लीजिए।'

फिलोसॉफी डिपार्टमेंट की प्रोफेसर सबुज कली सेन--'आचार्यश्री! अभी आपने कहा कि साधना के लिए बाहरी परिवेश भी अच्छा होना चाहिए। यदि बाहरी परिवेश अच्छा नहीं होगा तो क्या साधना नहीं होगी?'

आचार्यप्रवर--'एक भूमिका में निमित्तों की अनुकूलता चाहिए। उदाहरण के लिए एक छोटे बच्चे को अभिभावकों का पूरा साया चाहिए। अभिभावक उसे अंगुलि पकड़ कर भी चलाते हैं। जब वह बीस वर्ष का हो जाएगा, वह अपने आप चल सकेगा, अपना कार्य स्वयं कर सकेगा। जब तक छोटा है तो माता-पिता के सहयोग की अपेक्षा रहती है, जब बड़ा बन जाएगा तो तब उसकी आवश्यकता न भी रहे। साधना के संदर्भ में भी यही बात है कि जब तक साधना प्रारंभिक भूमिका में है, निमित्तों की अनुकूलता भी अपेक्षित रहती है। जब वह परिपक्व हो जाएगी तो प्रतिकूल निमित्तों का भी उस पर बुरा प्रभाव नहीं पड़ेगा। एक सीमा तक निमित्तों का सहयोग चाहिए, उसके बाद निमित्तों की परवाह नहीं रहती। हर परिस्थिति में साधना हो सकती है।'

वाइस चांसलर श्री स्वपन कुमार दत्त--'आचार्यश्री! आपके पास हर दल और हर वर्ग के लोग आते हैं। अभी मैं चित्र देख रहा था कि आपके पास नरेन्द्र मोदी भी आते हैं तो सोनिया गांधी भी। मोहन भागवत आते हैं तो मौलाना मदनी भी। ये लोग पार्लियामेंट में झगड़ते हैं। आप इन्हें क्या सलाह देते हैं?'

आचार्यप्रवर--'देखिए, कुलपतिजी! संसद देशहित के लिए चिंतन और निर्णय का स्थान है। वह देश की सेवा के लिए है। वहां हर सांसद को, चाहे वह किसी भी दल का हो, अपनी बात दृढ़ता के साथ रखने का अधिकार है। वहां बहस होती है, बहस के मूल में देश की सेवा है। सबके अपने-अपने विचार हो सकते हैं और जब दोनों के मतों में विरोध हो तो वहां टकराव की संभावना भी हो सकती है। होना यह चाहिए कि जहां राष्ट्रहित की बात हो और वहां अपने दल को भी गौण करना आवश्यक हो तो उसमें संकोच नहीं करना चाहिए। राष्ट्रहित प्रमुख और पार्टीहित गौण रहे तो विवाद और कदाग्रह होने की संभावना कम हो सकती है। जहां राष्ट्रहित गौण और पार्टीहित प्रमुख बन जाता है, वहां कदाग्रह की स्थिति बन सकती है।

तत्कालीन राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम एक बार अहमदाबाद के निकट स्थित प्रेक्षा विश्वभारती में आचार्य महाप्रज्ञजी से मिलने के लिए आए थे। उस समय आचार्य महाप्रज्ञजी ने बात-बात में उनसे कहा कि राष्ट्र नंबर एक है और पार्टी नंबर दो है। यह सुनकर कलाम जी बोले--'आपने यह बहुत अच्छी बात कही। आपके पास कोई नेता आए तो उन्हें यह सिखाइए कि राष्ट्र नंबर एक और पार्टी नंबर दो है, लोकसभा में

पहला स्थान राष्ट्र का और दूसरा स्थान पार्टी का रहे, तब तो अच्छा क्रम रह सकता है। जहां पार्टी प्रमुख और राष्ट्र गौण हो जाता है, वहां कदाग्रह, विवाद आदि की संभावना ज्यादा रहती है।

दूसरी बात है कि कभी-कभी राष्ट्रहित की भावना होते हुए भी विचारभेद हो सकता है। विचारभेद इस रूप में न हो कि हिंसा की स्थिति बन जाए। अहिंसा का पालन करते हुए अपने विचारों को दृढ़ता के साथ रखते हुए कार्य करने में कोई आपत्ति प्रतीत नहीं होती। बस! यह ध्यातव्य है कि विचार के साथ संस्कार भी ठीक रहें।

बोलपुर में इतिहास की पुनरावृत्ति

२२ मई। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने प्रातः शांतिनिकेतन से बोलपुर की ओर प्रस्थान किया। आचार्यप्रवर का बोलपुर आगमन स्थानीय जनता के उल्लास को चरम पर ले जाने वाला था। चारों ओर हर्षोल्लास छाया हुआ था। श्रद्धालुओं की प्रसन्न मुखाकृति उनकी आंतरिक प्रसन्नता को मुखर बना रही थी। करीब ३.० किमी का छोटा-सा विहार परिसम्पन्न कर आचार्यप्रवर बोलपुर हाईस्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में परम पूज्य आचार्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी और मुख्यनियोजिकाजी के उद्‌बोधन हुए।

परम पावन आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आदमी को अग्र और मूल--इन दोनों का विवेचन करना चाहिए। किसी चीज के ऊपरी भाग को देखना आसान और उसके भीतर देखना कुछ कठिन हो सकता है, किन्तु आदमी को यथापेक्षा, यथोचित रूप में कुछ भीतर या गहराई में जाने का प्रयास करना चाहिए। कार्य का कारण कुछ गहरा हो सकता है। अध्ययन में गहराई आ जाए तो कुछ गहरी निष्पत्ति प्राप्त हो सकती है। गहराई में जाने से रत्न प्राप्त हो सकते हैं। बीमारी का निदान हुए बिना उसके इलाज में कठिनाई हो सकती है। दुःख के कारण खोज कर उसे समूल नष्ट किया जा सकता है। केवल कार्य को देखना श्वानीवृत्ति और कारण को देखना सैंहीवृत्ति होती है। आदमी दुःख के मूल राग-द्वेष को प्रतनु बनाने का प्रयास करे तो वह एक दिन दुःख का समूल नाश कर सकता है।'

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'बोलपुर में आज से करीब ५८ वर्ष पहले परमपूज्य गुरुदेव तुलसी पधारे थे। उस समय उनके साथ महासती लाडांजी भी थीं। बताया गया कि गुरुदेव इसी स्कूल में विराजे थे और महासती लाडांजी का प्रवास आंचलिया परिवार के यहां हुआ था। कल की रात्रि में महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का प्रवास आंचलिया परिवार के यहां हुआ। इस प्रकार मानों इस विद्यालय में रहकर मैंने गुरुदेव तुलसी और आंचलिया परिवार के यहां रहकर साध्वीप्रमुखाजी ने महासती लाडांजी की पुनरावृत्ति कर दीं। कोलकाता की परिपार्श्वस्थ धरा पर हमारा विहरण हो रहा है। गुरुदेव तुलसी तेरापंथ की आचार्य परंपरा में पश्चिम बंगाल पधारने वाले प्रथम आचार्य थे। गुरुदेव ने सुदूर यात्रा का शुभारम्भ किया। बोलपुर के लोगों में खूब धर्मोद्योत होता रहे, उनके जीवन में सद्‌भावना, नैतिकता और नशामुक्ति का समावेश रहे, यह काम्य है।'

आचार्यप्रवर ने समुपस्थित बोलपुरवासियों को अहिंसा यात्रा की अवगति प्रदान कर संकल्पत्रयी स्वीकार करने का आह्‌वान किया तो लोगों ने अपने स्थान पर खड़े होकर तीनों संकल्प ग्रहण किए।

मुमुक्षु मधुमिता ने अपनी भूमि पर अपने आराध्य के अभिन्दन में अभिव्यक्ति दी। बोलपुर तेरापंथ महिला मंडल द्वारा स्वागत गीत का संगान किया गया। वीरभूम तेरापंथी सभा के मंत्री श्री इन्द्रचंद आंचलिया, स्व. मुनि मोहविजयजी के संसारपक्षीय पुत्र श्री किशोर आंचलिया, बोलपुर मारवाड़ी समाज के अध्यक्ष श्री पवन सुहासरिया, श्रीमती नीति सुराणा, बोलपुर हाईस्कूल के प्रिंसिपल श्री सुप्रियो शाह और सुश्री मनीषा रांका ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी। श्रीमती मंजू सुराणा, श्रीमती नीला डागा आदि ने गीत को प्रस्तुति दी।

ब्रह्मकुमारी नीतू बहन ने कहा--'जेठ की चिलचिलाती धूप में और गर्मी के इस मौसम में आचार्यश्री के सान्निध्य में आकर ऐसा लग रहा है कि मानों किसी वृक्ष की शीतलछाया में हम बैठे हैं। आप जैसे त्यागी, तपस्वी, सेवा की मूरत के दर्शन कर ऐसा लग रहा है कि आज हमारे किसी जन्म के पुण्यों का उदय हुआ है। परम पूज्य आचार्यश्री का प्रजापिता ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की ओर से तथा हमारी बड़ी दीदीजी की ओर से बहुत-बहुत स्वागत-अभिनंदन करती हूं। आपकी त्याग-तपस्यामय जीवनशैली को देखकर ऐसा लग रहा है कि अभी हमारी साधना बहुत बाकी है। कहा जाता है कि हम सभी परमात्मा की रचना हैं, किन्तु आचार्यश्री को देखकर ऐसा लगा कि आप परमात्मा की श्रेष्ठ रचना हैं। आपको देखकर परमात्मा की याद आती है। वह रचियता कितना सुंदर होगा, जिन्होंने आप जैसी सुंदर रचना को सृष्टि में भेजा। आपकी अहिंसा यात्रा सफल हो।'

पश्चिम बंगाल के मत्स्य विभाग मंत्री श्री चंद्रनाथ सिन्हा ने कहा---'हमारे लिए अत्यंत सौभाग्य कि बात है कि जैन धर्म के महान गुरु आचार्यश्री महाश्रमणजी हजारों किमी पैदल यात्रा करते हुए हमारे बीच पधारे। आज आचार्यश्री का स्वागत और अभिनंदन करके मैं स्वयं को गर्वित और आनंदित अनुभव करता हूं। आचार्यश्री की यह यात्रा भारतीय संस्कृति को सुदृढ़ बनाकर विश्वशांति की स्थापना में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे रही है।'

दुःख का मूल है कामना

२३ मई। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर प्रातः बोलपुर से बोटाग्राम के लिए प्रस्थित हुए। पूज्यप्रवर श्री मदनजी आंचलिया परिवार के निवास स्थान के बाहर पट्ट पर आसीन हुए। बताया गया कि इस घर और इसी पट्ट पर ५८ वर्ष पूर्व गुरुदेव तुलसी विराजमान हुए थे। पूज्यप्रवर ने वहां आसीन होकर गुरुदेव तुलसी की स्मृति में स्वरचित गीत 'चित्त में बसिया रे' का आंशिक संगान किया। इन दिनों इस क्षेत्र में केले और आम प्रचुर मात्रा में देखे जा सकते हैं। इन फलों से भरे हुए बड़े-बड़े वाहन मंडियों में पहुंचते हैं और वहां से छोटे-छोटे वाहनों में भरकर इन फलों को आगे विक्रयार्थ ले जाया जाता है। आज के विहार पथ में कई वाहनों में ये फल अवस्थिति लिए हुए थे। वाहनों की अधिकता के कारण मार्ग में कुछ जाम लगा हुआ था। पूज्यप्रवर उन वाहनों के बीच से होकर कुछ संकरे मार्ग से आगे पधारे।

रजतपुर के ग्रामीणजन आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन पथदर्शन से लाभान्वित हुए। आचार्यप्रवर अजय नदी पर बने पुल से इस पार पधारे। आचार्यप्रवर ने मार्ग में वीरभूम जिले की सीमा को अतिक्रान्त कर वर्धमान जिले की सीमा में प्रवेश किया। १३.५ किमी का विहार कर आचार्यप्रवर बोटाग्राम में स्थित मागाराम मेमोरियल हाईस्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत परम पावन आचार्यप्रवर ने कहा--'जीवन में कभी सुख तो कभी दुःख की स्थिति भी आ सकती है। दुःख का मूल लोभ है। सारा दुःख कामना से जुड़ा हुआ है। कामना की पूर्ति न होने पर आदमी दुःखी बन सकता है। भौतिक कामना की पूर्ति से मिलने वाला सुख परम और शाश्वत नहीं होता तथा वह कामना को बढ़ाने वाला भी हो सकता है। कामना तीन स्तर की होती है--अधम, मध्यम और उत्तम। अधम कामना में आदमी दूसरे का अनिष्ट चिंतन करता है। मध्यम कामना में आदमी दूसरों के लिए अनिष्ट नहीं चाहता, किन्तु स्वयं के लिए भौतिक कामना करता है। उत्तम कामना में आदमी अध्यात्म के संदर्भ में ज्ञानार्जन, दूसरों की सेवा, साधना आदि की कामना करता है। आदमी को अधम कामना नहीं करनी चाहिए तथा मध्यम कामना न छूट पाए तो भी उत्तम कामना करनी चाहिए। साधना में आगे-आगे बढ़ते-बढ़ते वह एक दिन निष्काम बन जाए, यह काम्य है।

आदमी को निष्काम रहने का प्रयास करना चाहिए। सेवा और दान के साथ की जाने वाली प्रतिफल की

भावना सेवा और दान के महत्त्व को कम कर सकती है। आदमी को भौतिक सुखों की ज्यादा नहीं, परमसुखों की कामना ज्यादा करनी चाहिए।'

आचार्यप्रवर की प्रेरणा से ग्रामवासियों ने सोत्साह अहिंसा यात्रा की संकल्पत्रयी स्वीकार की। विद्यालय के शिक्षक कामरूल जमाल ने आचार्यप्रवर के स्वागत में अपनी भावपूर्ण अभिव्यक्ति दी। मरोठी परिवार की महिलाओं ने आचार्यप्रवर की अभ्यर्थना में गीत का संगान किया। श्रीमती कल्पना आंचलिया ने गीत को प्रस्तुति दी।

आज दिन-रात में सैंकड़ों हिन्दू और मुस्लिम ग्रामीण आचार्यप्रवर के दर्शन और यथावसर पावन आशीष से लाभान्वित हुए। रात्रिकालीन सत्संग कार्यक्रम में पधारकर आचार्यप्रवर ने जनता को प्रतिबोध और साधुचर्या की अवगति प्रदान की। रात्रि में सुभाष घोष नामक ग्रामीण भैंस का दूध लेकर आया। वह बोला--'बाबा! भैंस का एकदम ताजा दूध है। फ्रिज में रखा हुआ नहीं है। आप इसे ले लीजिए।' आचार्यप्रवर ने उसे फरमाया कि हम लोग रात्रि में भोज्य और पेय सामग्री नहीं ले सकते। वह बोला--'मैं सुबह लेकर आ जाऊं?' उसे समझाया गया कि साधु के लिए लाई हुई भोज्य और पेय सामग्री भी साधु नहीं ले सकते। आज सायंकाल मौसम ने करवट ली और तूफान के साथ हल्की वर्षा भी हुई।

गुस्करा में पावन पदार्पण

२४ मई। परमाराध्य आचार्यप्रवर प्रातः बोटाग्राम से गुस्करा की ओर प्रस्थित हुए। आकाश में बादल अपनी अवस्थिति लिए हुए थे, इस कारण आज आतप ज्यादा नहीं था, किन्तु मौसम हल्की उमस लिए हुए था। मार्गस्थ देवोग्राम, केशवपुर और कमलटाकी के लोगों ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए तो आचार्यप्रवर ने उन्हें मंगल आशीष प्रदान की। आचार्यप्रवर के पदार्पण से गुस्करावासी अतिशय हर्षविभोर थे। अपने आराध्य का आगमन स्थानीय तेरापंथ समाज को प्रफुल्लित बनाए हुए था तो अन्य जैन एवं जैनेतर समाज में भी श्रमण संस्कृति उद्गाता आचार्यप्रवर के पदार्पण से उल्लास का वातावरण था। स्वागत जुलूस में विभिन्न वर्गों के लोगों की उपस्थिति उनकी आचार्यप्रवर के प्रति श्रद्धाभावना को दर्शा रही थी। बंगाली महिलाएं शंखध्वनि और उललूकनाद कर शांतिदूत आचार्यप्रवर के चरणों में अपनी विनयांजलि अर्पित कर रही थीं। पूज्यप्रवर करीब एक किमी अतिरिक्त चक्कर वाले मार्ग से स्वागत जुलूस के साथ गतिमान थे। यह पथ निराबाध होने के साथ-साथ बाजार के बीच अवस्थित था। बाजार में उपस्थित हजारों जैनेतर लोगों को भी आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। करीब १०.५ किमी का विहार कर आचार्यप्रवर गुस्करा बालिका विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में पूज्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी और मुख्यनियोजिकाजी ने लोगों को उत्प्रेरित किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'हमारी दुनिया में वह आदमी सुखी बन जाता है, जो पूर्णतया अभय होता है। यथार्थ और अहिंसा की साधना के लिए अभय का विकास आवश्यक है। असत्य संभाषण का एक कारण है--भय। डरना और डराना दोनों हिंसा है। डरना तो भय है ही, डराने की पृष्ठभूमि में भी भय हो सकता है। नीति के अनुसार चलने पर कोई भयभीत हो जाए, वह तो अलग बात है, किन्तु जानबूझकर किसी प्राणी को भयभीत बनाना अवांछनीय है।

हमारे कारण कोई प्राणी भयभीत न हो जाए, यह ध्यातव्य है। साधु को छह काय के जीवों का पीहर कहा गया है। हमारे स्वयं के जीवन में अभय का भाव पुष्ट रहना चाहिए, किन्तु गुरु का भय प्रशस्त रूप में रहना चाहिए। वह विकास में सहायक हो सकता है। शिष्य यह ध्यान रखे कि गुरु मुझसे अप्रसन्न न हो जाएं, उनकी कृपा मुझपर बनी रहे।

जीवन में प्रतिकूल परिस्थितियां आ सकती हैं। कोई विरोध करे, निंदा करे तो भी मानसिक संतुलन बनाए रखना चाहिए। आदमी को परिस्थितियों से डरना नहीं चाहिए, समुचित समाधान का प्रयास करना चाहिए। जो आदमी अभय बनने के लिए अभ्यास और पुरुषार्थ करता है, वह सफलता प्राप्त कर सकता है। जिसके भीतर अभय का भाव है, उसके भीतर कितनी शांति रहती है।'

मुख्यमुनिश्री और साध्वीवर्याजी को आशीर्वाद

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'मुख्यमुनि और साध्वीवर्या को एक वर्ष पूरा हो गया। दो दिन का अंतर है। ज्येष्ठ कृष्णा द्वादशी के सायंकाल साध्वीवर्या की नियुक्ति हुई और ज्येष्ठ कृष्णा चतुर्दशी के सायंकाल मुख्यमुनि की नियुक्ति हुई। एक साल बीत गया। जीवन में विभिन्न स्थितियां आ सकती हैं, उनमें आदमी को अभय रहने का प्रयास करना चाहिए। न डरना चाहिए और न ही डराना चाहिए, समुचित कार्य करना चाहिए। मुख्यमुनि और साध्वीवर्या को यह ध्यान रखना चाहिए कि कोई स्थिति सामने आए, कोई भी काम सामने आए, डरना नहीं चाहिए, यथासंभव हिम्मत नहीं हारनी चाहिए। हिम्मत हारना कमजोरी है। कठिन स्थिति और कठिन कार्य/बड़ा कार्य सामने आ जाए तो भी डरना नहीं चाहिए। अपनी क्षमता अनुसार उस कार्य को करने का प्रयास करना चाहिए। डरने से क्या होगा, आदमी को डरना नहीं, काम करने का प्रयास करना चाहिए। आदमी स्थितियों से कुछ सीखता रहे, आगे बढ़ता रहे। टॉर्च और बुहारी से पथ को प्रशस्त करता रहे, यह काम्य है। मुख्यमुनि और साध्वीवर्या टॉर्च और बुहारी हमेशा साथ में रखें। कठिनाइयों को 'ज्ञ परिज्ञा' से जानकर 'प्रत्याख्यान परिज्ञा' से उन्हें दूर करने का यथोचित प्रयास करते रहें। 'ज्ञ परिज्ञा' टॉर्च के समान और 'प्रत्याख्यान परिज्ञा' बुहारी के समान है।

पूज्यप्रवर ने चतुर्दशी के संदर्भ में हाजरी का वाचन करते हुए साधु-साध्वियों को पावन संबोध प्रदान किया। इस दौरान पूज्यप्रवर द्वारा किया गया शासन भक्ति की भावना से सराबोर गीतों का संगान प्रेरणादायक और आह्लाददायक था। आचार्यप्रवर के आह्वान पर उपस्थित गुस्करावासियों ने सोत्साह अहिंसा यात्रा के तीनों संकल्प स्वीकार किए।

स्थानीय एसडीओ श्री समीमजी ने कहा--'परम पूजनीय आचार्यश्री की पवित्र जीवनशैली को देखकर मैं अभिभूत हूं। आपने हमारे कल्याण के लिए तीन प्रतिज्ञाएं करवाई हैं, मैं उनका दृढ़ता से पालन करूंगा।'

गुस्करा नगरपालिका की ओर से नित्यानंद चट्टोपाध्याय ने कहा--'आज गुस्करा की माटी पर अपने चरण रखकर आचार्यश्री महाश्रमणजी ने हमें धन्य-धन्य कर दिया। गुस्करा नगरपालिका की ओर से मैं प्रार्थना करता हूं कि आप बार-बार यहां पधारें। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि आपके द्वारा करवाए गए संकल्पों का दृढ़ता से पालन करूंगा।

तेरापंथी सभा गुस्करा की ओर से श्री झंवरलाल मरोठी, डॉ. प्रेमसुख मरोठी, बालिका मुस्कान और भूमि मरोठी, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती सुमन मरोठी, मंत्री श्रीमती उर्मिला मरोठी और पूर्व अध्यक्ष श्रीमती सुमन मरोठी तथा सिनियर सिटीजन की ओर से श्री सुकुमार सरकार ने अपनी अभिव्यक्ति के द्वारा आचार्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। तेरापंथ महिला मंडल द्वारा स्वागत गीत का संगान किया गया।

वर्धमान के एसपी श्री कुणाल अग्रवाल किसी अत्यावश्यक कार्य में व्यस्त होने के कारण स्वयं नहीं पहुंच सके, इसलिए उन्होंने गुस्करा बीट हाउस के अधिकारी श्री पुष्पेन्द्र जाना और आउसग्राम पुलिस स्टेशन के आइसी श्री सुजीत कुमार पाती को पूज्यप्रवर की सेवा में पहुंचने का निर्देश दिया तथा उन्होंने उनके साथ पूज्यप्रवर को समर्पित करने के लिए गुलदस्ता भी भेजा। कार्यकर्ताओं ने साधुचर्या की जानकारी देकर सचित्त

फूलों से युक्त उस गुलदस्ते को आचार्यप्रवर के सम्मुख लाने से पूर्व रोक दिया।

आज दिन-रात्रि में पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ बंगाली लोगों के आने का तांता लगा रहा। इस क्रम में सैंकड़ों लोग आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। इससे मिलने वाला सुकून लोगों की भावविभोर मुखाकृति पर स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा था।

आसक्ति से बचो, परमसुख मिलेगा

२५ मई। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः गुस्करा से कयरापुर के लिए प्रस्थान किया। आज का विहार लंबा था, फिर भी करुणा के सागर पूज्यप्रवर करीब डेढ़ किमी का चक्कर लेकर गुस्करा में एक अक्षम श्रद्धालु महिला को दर्शन देने पधारे। आचार्यप्रवर के अनुग्रह में अभिस्नात वह महिला और उसके परिजन अतिशय आह्लादित थे। मार्ग में अनेक श्रद्धालुओं ने अपने-अपने घरों के बाहर आचार्यप्रवर से मंगलपाठ का श्रवण किया। विहार के दौरान अनेक व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के बाहर भी संबद्ध लोगों को आचार्यप्रवर के दर्शन और पूज्यप्रवर के मुखारविन्द से मंगलपाठ श्रवण का सौभाग्य प्राप्त हुआ। गुस्करा तथा ओरग्राम के सैंकड़ों लोग आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित हुए। विहारपथ के आसपास 'तिल' की खेती बहुतायत में दृष्टिगोचर हो रही थी। बताया गया कि यह फसल अब कटाई के सन्निकट है। १४.३ किमी का विहार कर आचार्यप्रवर कयरापुर विद्यासागर विद्यापीठ में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत अपने पावन प्रवचन में परम सुख की प्राप्ति के लिए भौतिक सुखों की आसक्ति से बचने की प्रेरणा प्रदान की। पूज्यप्रवर की प्रेरणा से उपस्थित ग्रामवासियों ने अहिंसा यात्रा के तीनों संकल्प ग्रहण किए।

प्रकृति की लीलाओं के बीच प्रलम्ब विहार कर वर्धमान पधारे वर्धमान के प्रतिनिधि

२६ मई। आचार्यप्रवर का आज का निर्धारित प्रवास स्थल करीब १७.२ किमी की दूरी पर स्थित था। गर्मी के मौसम में इतने लंबे विहार में प्रचंड धूप की संभावना भी स्पष्ट थी। आचार्यप्रवर सूर्योदय के बाद भी प्रतिदिन जप आदि का प्रयोग करते हैं। इस कारण इन दिनों आचार्यप्रवर के विहार का प्रारम्भ सूर्योदय के करीब एक घंटे बाद होता है। ऐसी स्थिति में धूप और भी प्रखर बन जाती है, किन्तु आचार्यप्रवर निर्धारित जप आदि किए बिना आहार तो दूर, पानी भी ग्रहण नहीं करते। आचार्यप्रवर ने आज के विहार को सूर्योदय के कुछ ही समय पश्चात ही प्रारम्भ करने और अवशिष्ट जप को श्री सुपारसमल, आलोक, मनीष चोरड़िया परिवार के मार्गस्थ स्थान में कुछ समय रुककर करने का निर्णय लिया। तदनुसार आचार्यप्रवर करीब ५.१५ बजे कयरापुर से प्रस्थित हुए। आज प्रातःकाल से आकाश मार्ग में यत्र-तत्र बादलों की टुकड़ियां विहरण कर रहीं थीं। इस कारण आतप कुछ कम था, किन्तु उमस शरीर को पसीने से तर-बतर बना रही थी। पूज्यप्रवर ने निर्धारित जप आदि किए बिना मार्ग में पानी भी ग्रहण नहीं किया। चोरड़िया परिवार का स्थान करीब ६.० किमी दूर था, किन्तु आचार्यप्रवर अपने संकल्प के प्रति दृढ़ रहे। मार्ग में 'हल्दीगांव', आलमपुर, तालितपुर के ग्रामीण आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। ईस्ट-वेस्ट मॉडल स्कूल की प्रिंसिपल श्रीमती दास ने आचार्यप्रवर से स्कूल में पधारने की प्रार्थना की। उन्होंने बताया कि इस विद्यालय में लगभग दो हजार बच्चे पढ़ते हैं। आचार्यप्रवर ने संक्षिप्त पावन संबोध प्रदान करते हुए मंगलपाठ सुनाया।

करीब ६.० किमी की दूरी तय कर आचार्यप्रवर चोरड़िया परिवार के गोकुल ऑटो क्रेडिट प्राइवेट लिमिटेड परिसर में पधारे। अपने आराध्य के अनुग्रह में अभिस्नात चोरड़िया परिवार धन्यता की अनुभूति

कर रहा था। पूज्यप्रवर ने वहां करीब पौन घंटे आसीन होकर जप आदि किया। तदुपरान्त पूज्यप्रवर पुनः वर्धमान की ओर प्रस्थित हुए और करीब एक किमी बाद पेय ग्रहण किया। आज के प्रायः पूरे विहार के दौरान सूर्य और बादलों का युद्ध-सा चल रहा था। पश्चिम से सूर्य की ओर आती हुई बादलों की छोटी-छोटी टुकड़ियां सूर्य को ढ़कने का प्रयास कर रही थीं, मानों वे पूज्यप्रवर के विहार तक आतप को बाधित करने के लिए कृतसंकल्प थीं, किन्तु तेजस्वी सूर्य के आगे बादलों का प्रयास कभी सफल हो रहा था तो कभी असफल। जब-जब बादलों का प्रयास विफल हो रहा था, तब-तब सूर्य की किरणें मानों बादलों का उपहास करती हुई प्रखर आतप बरसा रही थीं और उमस के साथ मिलकर शरीर के पसीने को बाहर आने के लिए विवश कर रहीं थीं। परमाराध्य आचार्यप्रवर कुदरत की इन लीलाओं से अप्रभावित रहते हुए निरंतर गंतव्य की ओर गतिशील थे। मार्ग के बांयीं ओर स्थित १०८ शिवमंदिर स्थान के लिए बताया गया कि यहां शिव के १०८ मंदिर निर्मित हैं।

वर्धमान के प्रतिनिधि आचार्यप्रवर के स्वागत में वर्धमानवासियों ने पलक पांवड़े बिछा दिए। चारों ओर हर्षोल्लास छाया हुआ था। भले वर्धमान में तेरापंथ समाज के परिवारों की संख्या कम हो, किन्तु उनका उल्लास आधिक्य लिए हुए था। अन्य जैन एवं जैनेतर समाज का उत्साह भी दर्शनीय था। करीब १७.२ किमी का प्रलंब विहार परिसम्पन्न कर आचार्यप्रवर वर्धमान (बर्दमान) स्थित श्री रामकृष्ण शारदापीठ हाईस्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

समीपस्थ रवीन्द्र भवन में आयोजित मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का उद्‌बोधन हुआ।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में अनुकंपा को आत्मसात करने की प्रेरणा प्रदान की।

पूज्यप्रवर के प्रवचन के उपरान्त मुख्यनियोजिकाजी का वक्तव्य हुआ। कार्यक्रम में करीब ११.११ बजे से आचार्यप्रवर ने वर्धमानवासियों को सम्यक्त्व दीक्षा प्रदान की। पूज्यप्रवर की प्रेरणा से उपस्थित जनता ने अहिंसा यात्रा के तीनों संकल्प भी ग्रहण किए। तेरापंथ महिला मंडल ने स्वागत गीत का संगान किया। तेरापंथी सभा की ओर से कोषाध्यक्ष श्री मोतलीलाल बोहरा, प्रोफेसर प्रेम अग्रवाल, श्री रामकृष्ण शारदापीठ उच्च विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री अशोक कुमार घोष ने अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी। तेरापंथ कन्या मंडल और ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने पूज्यप्रवर की अभ्यर्थना में प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया। कार्यक्रम में कोलकाता के श्रद्धालु भी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

आज सायंकाल तेज तूफान के साथ वर्षा का दौर शुरू हुआ। तूफान कुछ क्षण बाद थम गया, किन्तु वर्षा लंबे समय तक जारी रही। इस कारण दूसरी इमारत में स्थित संत गुरुवंदना, प्रतिक्रमण और अर्हत्‌वन्दना के लिए आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में उपस्थित नहीं हो पाए।

पत्र व्यवहार की दृष्टि से हमारा पता है--

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, अणुव्रत भवन, २१० दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ फोन नं-७३८४४३९५६०, ०७३८४४३९५६२
दिल्ली कार्यालय का नं.-२३२३४६४१, ९३१०२३४६४१

●

स्वामी आदर्श साहित्य संघ के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक हेमराज बैद के द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-९, नवीन शाहदरा, दिल्ली ११००३२ से मुद्रित एवं आदर्श साहित्य संघ, अणुव्रत भवन, २१० दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली ११०००२ में प्रकाशित। सम्पादकः केशवप्रसाद चतुर्वेदी